



कोंकणी मुळावें पुस्तक कोंकणी भाषा प्रवेशिका KONKANI PRIMER



ई-पाठशाला

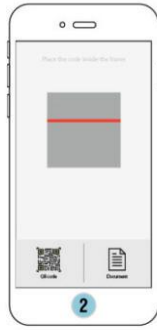
क्यूआर (QR) कोड से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पॉन्स कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टैबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला epathshala.nic.in के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।



प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें



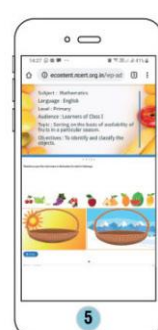
क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें



स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें



लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें



उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें—
<https://epathshala.nic.in/topics.php> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। दीक्षा का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टैबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।



अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें



अपनी भूमिका चुनें—शिक्षक या विद्यार्थी



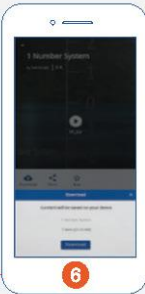
पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें



क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें



कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें



क्लिक करके क्यूआर कोड से संबंधित ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें—
<https://diksha.gov.in/resources> पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।



“ जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।”

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

कोंकणी मुळावें पुस्तक
कोंकणी भाषा प्रवेशिका
KONKANI PRIMER



भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

कोंकणी मुळावें पुस्तक
कोंकणी भाषा प्रवेशिका
KONKANI PRIMER

A basal reader of Konkani alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Ramanujam Meganathan

ISBN: 978-81-970852-2-2

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024

All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: L Nandakumar, Shwetha Ramesh

Cover Photo: Sudhir Pai,

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.



संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary



भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy



संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चों में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

भारत एक बहुभाषी देश आसून देशांतल्या वेगवेगळ्या वाठारांनी जायत्यो भासो उलयतात. आमच्या शाब्दीक संग्रहांत जायत्यो भासो वापरप हें देशाचें एक समान खाशेलपण आसा; भास आमकां एकठांय जोडपाचें काम करता आनी एकवटीत दवरता. भारताचें बहुभाषीक स्वरूप ही एक व्हड संपत्ती आसून ती देशाच्या समाजीक-सांस्कृतीक, अर्थीक आनी शिक्षणीक उदरगती खातीर कार्यक्षमपणान वापरपाची गरज आसा आनी ह्याच कल्पनेचेर राष्ट्रीय शिक्षण धोरण (एनईपी) 2020 खर भर दिता. शिकप्यांक स्वताच्या भाशेंत (भाशांनी) अभ्यास करपाची संद मेळची म्हणून दरेका पांवड्यार शिक्षणांत बहुभाषीकतायेक चालना दिवपाचो प्रसार करपाची शिफारस तातूंत केल्या. सगळ्या भारतीय भाशांनी शिकोवपाचें-शिकपाचें साहित्य तयार केल्यार बहुभाषीक मालमत्तेक चालना मेळटली आनी ताका लागून 'विकसीत भारताचें' स्वप्न साकार करपाक चड बरें योगदान दिवपाक मेळटलें. अशें म्हटल्यार, एनईपी 2020 कडेन जुळोवन आदल्या दर्ज्याचे प्रायमर विकसीत करपाक भारतांतल्या दर एका प्रदेशाच्या खाशेल्या भाषीक आनी सांस्कृतीक खाशेलपणांक संबोधीत करपी एक व्यापक आनी समावेशक दृष्टीकोन गरजेचो आसा. ह्या प्रायमरांचो हेतू फकत वाचन

आनी बरोवप हाका भाशेची कुशळटाय दिवप न्हय तर सुरवेच्या पांवड्यावेल्या शिकपी लोकांमदीं सृजनशीलताय आनी समीक्षात्मक विचार वाडोवप आसा. वर्णमाळेचीं अक्षरां आनी भाशेचीं चिन्नां उच्चारप, वळखप, समजून घेवपा खातीर हो एक मुळाधार आसा. तशेंच शब्दाच्या सुरवातीच्या, मध्य आनी निमाण्या सुवातेर आशिल्लीं अक्षरां अशा तांच्या संयोजनांतल्यान तयार केल्ल्या ह्या अक्षरांच्या एक वा चड संचांच्या अर्थाचीय भुरग्यांक वळख करून दिता. तशेंच, उपरांत सादर केल्ल्या अक्षरांचें लेखन सराव सुलभ करपी उदाहरणां तातूंत मेळटात; आनी ह्या पदांक वा यमकांक लागून विद्यार्थ्यांक तांची भास आनी संज्ञानात्मक कुशळटाय विकसीत करपाक आदार जातलो.

दिसंबर 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Konkani Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi

Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru

Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi

Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi

Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Coordinator

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi

Editorial Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Anant Agni, Headmaster, Ravindra Kelekar Dnyanmandir, Margao, Goa

Sudhir Pai, Computer Teacher (ICT), Satyawati Soiru Angle Hr. Sec. School, Mashem, Canacona, Goa

Saurabh Varik, Junior Resource Person-I, Linguistic Data Consortium for Indian Languages (LDC-IL), CIIL, Mysuru

Hindi Reviewer

Satyendra Kumar Awasthi, Senior Resource Person II, LDC-IL, CIIL, Mysuru

Design Team

Hilal Ahmad Dar, Junior Resource Person, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru

Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Eastern Regional Language Centre, (CIIL), Guwahati

Saravanan A S, Graphic Editor, SPPEL, CIIL, Mysuru

Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru

Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

G Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

कोंकणी मुळावें पुस्तक वा कोंकणी प्रवेशिका कशी वापरची?

राष्ट्रीय नवें शिक्षण धोरण 2020 आनी राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडो 2022 खाला तीन ते आठ वर्सां पिरायेच्या भुरग्यांक आवय भास, घरगुती भास, थळावी भास आनी प्रादेशीक भाशेंतल्यान शिक्षण दिवपाची वेवस्था केल्या. शिकपी लोकांक आवय भाशेंतल्यान शिक्षण दिवपाचे जायते फायदे आसात. हाका लागून भुरग्यां मदीं आपल्या आवय भाशे विशीं मोगाची भावना निर्माण जाता. हे नदरेन केंद्र सरकारान 3 ते 6 वर्सां पिरायेच्या भुरग्यांक बालवटिका आनी मुळाव्या पांवड्यार भुरग्यांक मुळावी साक्षरताय दिवपाची वेवस्था केल्या. थळाव्या गितां आनी कथां वरवीं भुरग्यांचें मौन पयस करून तांची मौखीक भास विकसीत करपाचेर तें लक्ष केंद्रीत करता. कथा सांगपाच्या आनी संभाषणाच्या पद्धतींतल्यान हें करपाचें काम सुरु आसा. हाचे वांगडाच भुरग्यांच्या आवाजाची वळख, वर्णमाळेची वळख, वाचन आनी लेखन अभ्यासा खातीर भास शिकोवपी पुस्तकांचोय उपेग करतात.

बालवटिका पांवड्यार सावन तिसऱ्या वर्गा मेरेनच्या भुरग्यांक आवयभाशेंत शिकयल्यार तांच्या बौध्दिक विकासा वांगडाच सृजनशीलताय आनी कल्पनाशक्त लेगीत विकसीत जावंक शकता. भुरगीं ल्हव ल्हव हिंदी कशी शिकूंक शकतात आनी इंग्लीश भाशेंत वाचपाक आनी बरोवपाक शिकपा वांगडाच आवय भाशेंत वाचपाक आनी बरोवपाक कशी शिकूंक शकतात हाची अर्थपूर्ण पद्धत राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडो, 2022 त सविस्तर दिल्ली आसा. ह्या पुस्तकांत भुरग्यांची संस्कृताय आनी तांच्या वातावरणांतल्यान शब्दसंग्रह एकठांय करून तांकां हातूंत सुवात दिल्या.

भुरग्यांक घरच्या भाशेंतल्यान वाचपाक आनी बरोवपाक सुरवात करून राज्य भाशेंतल्यान वाचपाची आनी बरोवपाची कुशळताय वाडोवप हो बहुभाशी शिक्षणाचो मुळावो हेतू आसा. कोंकणी आनी हिंदी भाशेंत सादर केल्लें हें पुस्तक गोंय, महाराष्ट्र, कर्नाटक आनी केरळ राज्यांतल्या कोंकणीच्या शिक्षकांक आनी विद्यार्थ्यां खातीर तयार केलां. मुळाव्या साक्षरते खातीर चार मुखेल पावलां आसात. पयल्या पांवड्यार कथा, गद्य आनी चित्रां वरवीं भुरग्यांची बौध्दिक विकास जाता. ते उपरांत भास शिकोवपा खातीर भुरग्यांक वस्तू तशेंच उतरांच्या परस्पर संबंदाची वळख करून दितात. उतरांनी मांडिल्लीं अक्षरां वळखतात. ह्या समानार्थी उतरांत भुरगीं वैयक्तीक अक्षरां डी-कोड करपाक शिकतात. डिकोडींग वरवीं भुरग्यांक आवाज आनी अक्षर हांचे मदलो संवाद समजता. भाशेचें शिक्षण पुस्तक कशें वाचप हाचे मुळावे मुद्दे सकयल बरयल्यात.

आवाजची वळख : भुरगीं चित्र पळयतले आनी वस्तूचें नांव कितें तें सांगतले. शिक्षक विचारतले, चित्राचें नांव खंयच्या आवाजान सुरु जाता? देखीक, ‘अ’ आवाजान सुरु जावपी ‘अनस’ हें चित्र पळयतकच भुरगीं तें वळखूंक पावतलीं.

अक्षर वळख: शिक्षक पयलीं भुरग्यांक ‘अ’ अक्षर कशें दिसता तें सांगतलो. उपरांत कांय अक्षरां वा उतरांतल्यान ‘अ’ अक्षर वळखुपाक सांगतलो. तीन वा चार उतरांतल्यान भुरगीं ‘अ’ अक्षरांचो आवाज उच्चारून ‘अ’ अक्षर बरोवपाचो सराव करतलीं.

वाचन: भुरगीं चित्रां पळोवन आपल्या भाशेंत शब्द उच्चारतले. भुरगीं बोटां दावें कडल्यान उजवे वटेन व्हरून ‘अक्षर’ आनी ‘आवय’, ‘कमळ’ सारकिलीं उतरां वाचतलीं. हेर उतरां वाचून आनी शब्दांत ‘अ’ आसा जाल्यार भुरगीं ‘अ’ वळखून वाचतलीं. शिक्षक भुरग्यांक विचारतलो वा सांगतलो की, ‘अ’ अक्षर खंय आसा- तें शब्दाचे सुरवेक, मदीं आनी शेवटाक आसूं येता.

बोर्ड वा पड्ड्याचेर ‘अ’ वाचतना शिक्षक ह्या उतरां वांगडा आनीक तीन वा चार शब्द बरोवन काडटलो. तो भुरग्यांक उतरां वाचपाक आनी अक्षरां वळखुपाक सांगतलो. पुस्तकांतलीं चित्रां पळोवन हीं उतरां भुरग्यांक वळखूंक मेळटलीं. भुरग्यांक आपल्या आवय भाशेंतल्यान तें वाचप सोयीचें दिसतलें.

लेखन-शिक्षक पयलीं भुरग्यांक ‘अक्षर’ ह्या उतरांतलो ‘अ’ बरोवपाक शिकयतले. बरोवपा खातीर दावें कडल्यान उजवे कडेन पेन कशें हालोवचें तें शिक्षक तुमकां दाखयतले. ताचे उपरांत, भुरगीं पुस्तकांत दिल्ल्या रिकाम्या जाग्यार आनी वर्णमाळा पळोवन स्वता ‘अ’ बरयतले. भुरगीं वाचतात आनी बरयतात तेन्ना शिक्षक तांकां आदार करतलो.

स्कंद पुराणांतल्या सह्याद्री खंडाच्या मतान, भारताची पुराय अस्तंत दर्यादेग सप्त कोंकणस हें सामान्य नांवान सात प्रांतांनी विभागिल्ली आसा. ते म्हळ्यार सौराष्ट्र, कोंकण, करहडा, कर्नाटा, तौलवा, केरळ आनी बार्बरा. कोंकणांत अपरंत ह्या नांवान वळखतात तो उत्तर कोंकण आनी गोंयचो आस्पाव आशिल्लो दक्षीण कोंकण. कोंकणी ही संज्ञा कोंकणांतल्यान आयल्या. महाराष्ट्र राज्यांतल्या रत्नागिरी, सावंतवाडी, गोंय राज्यांत, कारवार, हलियाल आनी सुपा ह्या उत्तर कर्नाटकांतल्या तालुक्यांनी कोंकणी भाशीक लोक सांपडटात. कर्नाटकांतल्या दक्षीण कॅनरा जिल्ह्यांत आनी केरळाच्या दर्यादेग वाठारांनी खास करून कोचीनांत कोंकणी भास उलयतात.

कोंकणी प्रवेशिका हें प्राथमीक वर्गांतल्या आमच्या भुरग्यां खातीर कोंकणीचेर तयार केल्लें प्राथमीक पुस्तक जावन आसा. हें पुस्तक उजवाडाक हाडपाक सीआयआयएल-एनसीईआरटीक व्हड खोस जाता, कोंकणी प्रवेशिकेक लागून भुरग्यांक चड यत्न करिनासतना कोंकणी शिकपाक आदार जातलो.

भुरग्यांच्या तोंडी भाशेचे उदरगती खातीर दरेक नोंदीत दोन-तीन वाक्यांची ल्हान ल्हान गितां दिल्यांत. शिक्षक गावन आनी वाचून भुरग्यां कडेन चर्चा करतले आनी शाळेच्या वाचनालयांत उपलब्ध आशिल्ल्या भुरग्यांच्या कथा पुस्तकांतल्यान कथा वाचून भुरग्यां कडेन लेगीत चर्चा करतले. तशेंच शिक्षक पयल्या आनी दुसऱ्या वर्गांतल्या भुरग्यांक तांच्या आवयभाशेंतल्यान काणयो आनी गितां सांगतले. प्रवेशिकेंत दिल्ले शब्द फकत साक्षरतेचो नमुनो आसात. भुरग्यांक शेंकड्यांनी उतरां वा शब्द खबर आसतात. एक वर्णान तयार जाल्ले उतर सांग अशें सांगल्यार भुरग्यांक जायतीं उतरां खबर आसतात आनी तीं सांगूंक लेगीत शकतात. शिक्षक तुमकां 'अ' पासून सुरू जावपी कांय उतरां सांगात अशें सांगपाक शकता. भुरग्यांच्या सोयी खातीर पयले हे भाशेंत उपलब्ध आशिल्ल्या वर्णमाळेंतलीं गितां/अक्षरां/शब्दां दिल्यांत. हीं शिकतना भुरगीं आवयभाशेंतल्यान हिंदीचो आवाज आनी लिपीय शिकपाक शकतात.

टिपण: कोंकणी भाशेंत हिंदी भाशेतले सगळे वर्ण नात. देखूनच फुडें उरिल्ले वर्ण हिंदी भाशेंतल्यान घेतल्यांत. आवयभाशेंत उपलब्ध आशिल्लीं अक्षरां आनी आवयभाशेंत नाशिल्लीं हिंदी अक्षरां एकठांय करून ही प्रवेशिका तयार केल्या. राज्यांतल्या शाळांनी वांटिल्ली 'शिक्षक सहाय्यक पुस्तिका' वाचून मुळाव्या साक्षरते विशीं चड म्हायती मेळूं येता. कोंकणीत ऋ, प्र, श्री, अं, अः अक्षरान सुरू जावपी शब्द मेळनात. देखून ह्या अक्षरांचें प्रतिनिधित्व करपाखातीर आमी हेर भाशांतल्यान कांय उतरां घेतल्यांत. ज आनी ङ सारकिल्या अक्षरां खातीर आमी बरोवपाच्या सरावाक म्हूण रितीं सुवाती सोडल्या.

'अं' अनुस्वार: नाकयो उच्चार दाखोवपा खातीर स्वराचेर (ं) अशी तीब दिवन दाखयिल्ली कुरू: कंस, हांव, चींव, भूंय, रेंव.
'अः' विसर्ग: संस्कृत उतरांच्या निमाणें स, र अश्या अक्षरांचो उच्चार अकस्मात ह कसो जाता तो दाखोवपाची (ः) अशी करू. विसर्ग चडसो कोंकणीत घोळना: अंतःकरण, प्रातःकाळ.

'ङ', कोंकणी वर्णमाळेंतलो सोळावो वर्ण; पांचवें व्यंजन [ङ]; क वर्गणांतलें अनुनासीक; 'ड' ह्या अक्षरान कोंकणीत खंयचेंच उतर सुरू जायना. 'ज', कोंकणी वर्णमाळेंतलो एकविसावो वर्ण; धावें व्यंजन [ज]; च वर्गणांतलें अनुनासीक; अक्षर 'ज' ह्या अक्षरान कोंकणीत एकूय उतर सुरू जायना. 'ळ', कोंकणी वर्णमाळेंतलो पंचेचाळिसावो वर्ण; चवतिसावें व्यंजन [ळ]; मुर्धन्य अक्षर ळ ह्या अक्षरान कोंकणीत खंयचेंच उतर सुरू जायना.

सकयल दिल्ल्यो ओळी पळयात आनी दिल्ल्या सुवातींनी त्यो ओळी काडपाचो यत्न करात :

उबी वळ

:



आडवी वळ

:



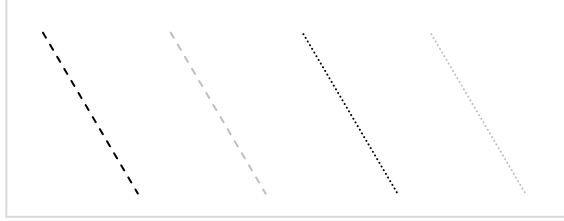
तिरकस वळ 1

:



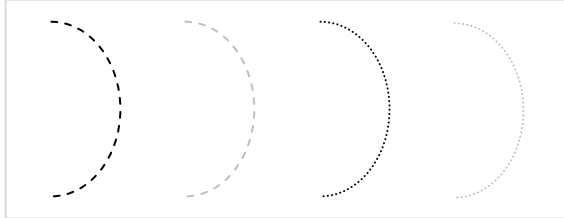
तिरकस वळ 2

:



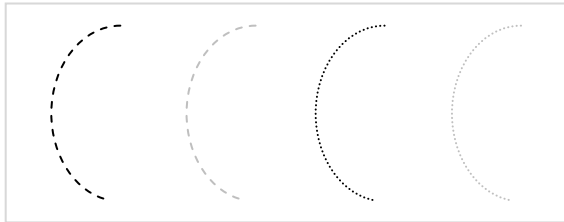
अर्ध वृत्ताकार वळ 1

:



अर्ध वृत्ताकार वळ 2

:



टिपण : शिक्षक तुमकां पॅन/पेन्सील कशी धरची आनी दिल्ल्या जाग्यार वळ कशी काडची तें शिकयतलो.

कोंकणी वर्ण

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व	श	ष	स
ह	ळ	क्ष	ज्ञ			

अ

अनस

अनानास

अनस भायल्यान काटेरी
शेंडो ताच्या माथ्यार
भितरल्यान गोडच गोड
खावपाची लागता ओड



अलंकार

गहना



अक्रोड

अखरोट



अळसांदो

लोबिया बीज

अ

अ

अ

आ

आडसर

नारियल

माडाक लागता आडसर
उदक पिवया सरसर



आकाशदिवो

आकाशदिया



आखाणो

अंगूठा



आळूं

अरबी के पत्ते

आ

आ

आ

इ

इसवण

सुरमई

नुस्त्याचो राजा इसवण,
रुचीक ताचें कालवण



इमारत

इमारत



इस्त्री

इस्त्री



इजार

पतलून

इ

इ

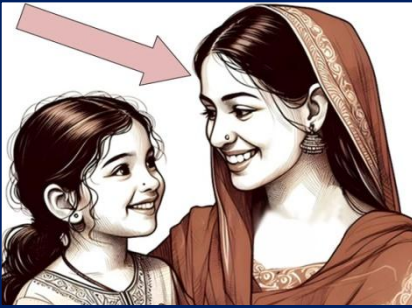
इ

ई

बाई

अध्यापिका

घरांत आसता आई,
शाळेंत आसता बाई



आई

माँ



समई

दीपदान



ईभ

हाथी

ई

ई

ई

उ

उजवात

अगरबत्ती

देवा मुखार पेटय उजवात,
नमळायेन जोड हात



उपीट

उपीट



उकण्णें

इडली कुकर



उशें

तकिया

उ

उ

उ

ऊ

ऊय

ऊं

माथ्यांत आसता ऊय,
तोपता जशी सूय



ऊस

गन्ना



खाऊ

अल्पाहार



ऊल

हरा प्याज़

ऊ

ऊ

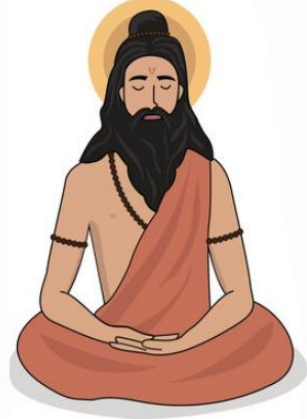
ऊ

ऋ

ऋषी

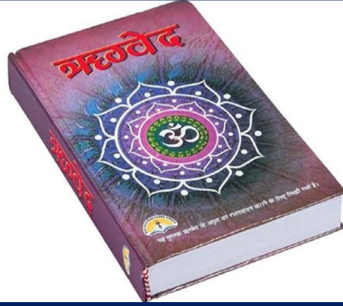
ऋषि

यज्ञ सदांच ऋषी करतात,
वेद-मार्गार पावल दवरतात



ऋण

ऋण



ऋग्वेद

ऋग्वेद



ऋषभ

वृषभ

ऋ

ऋ

ऋ

ए

एकारत

आरती दिया

पेटय एकारत,
दाखय देवाक आरत



एरंड

एरंड



एडको

भेड़



एळणी

ढक्कन

ए

ए

ए

ऐ

ऐक्य

एकता

ऐक्य आसल्यार जिकतले
फूट आसल्यार हारतले



ऐरावत

ऐरावत



ऐरण

निहाई



ऐवज

धन-दौलत

ऐ

ऐ

ऐ

ओ

ओंवळ

बकुल फूल

ओंवळ फुलल्या बांय कडेन
परमळ फांकला सगले कडेन



ओळमो

दीमक



ओटंब

बड़हल



ओकल

चश्मा

ओ

ओ

ओ

औ

औदुंबर

गूलर

औदुंबराच्या झाडार
पानां बरीं सळसळतात
तांबडींच ताची फळां
अलंकार कशीं सोबतात.



औजार

औजार



औशधी

औषधि



और

बाढ़

औ

औ

औ

अं

अंबारी

हौदा

हतयाचे फाटीर अंबारी
बसल्या ताचेर रायाची स्वारी



अंकूर

अंकुर



अंगार

अंगार



अंकणी

संगीत स्वर

अं

अं

अं

अः

प्रातः

सुबह

सोबीत प्रातःकाळचो वेळ
सुर्य उदेला



अंतःकरण

अंतःकरण



दुखः

दुखः



क्रमशः

क्रमशः

अः

अः

अः

क

कमळ

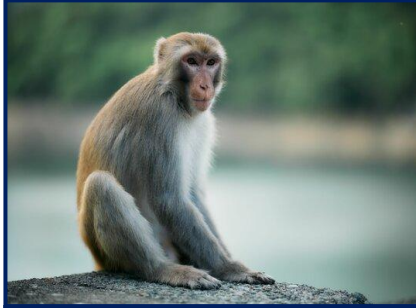
कमल

कमळ फुलता तळ्यांत,
भुलयता आमच्या दोळ्यांक



कणंग

शकरकंद



माकड

बंदर



बांक

बेंच

क

क

क

ख

खतखतें

मिश्रित सब्जी

तरेकवार भाजयांचें
सोबीत अशें नातें
एकठांय सगळ्योच येतात
तयार जाता खतखतें



खडू

खडिया



चिखल

कीचड़



पोशाख

पोशाक

ख

ख

ख

ग

गलबत

जहाज

येवं दी कितलींय मोडां, वादळां
दर्याचेर सोबीत गलबत तरंगता
तारवट्याच्या धिरार गलबत
एका देगे वेल्यान दुसरे देगेर पावता



गरुड

गरुड



आगगाडी

रेलगाडी



रंग

रंग

ग

ग

ग

घ

घर

घर

धाकटुलेंच म्हजें आसा घर,
खोस भरल्या घरभर



घड

केले का गुच्छा



घड्याळ

घड़ी



घसघसो

झरना

घ

घ

घ

ड.

गङ्गा/गंगा

गंगा

दोंगर दरींतल्यान व्हांवता हांव
दर एकल्याक पावतां हांव
पवित्र मानतात सगळे म्हाका
गङ्गा/गंगा म्हजें नांव



आङ्गण/आंगण

आँगन



काङ्कण/कांकण

कंगन



काङ्सव/कांसव

कछुआ

ड.

ड.

ड.

च

चंद्र

चंद्रमा

चंद्राक भुरगीं म्हणटात चंदामाम
ताका पळोवन मुकाट्यान करतात
माम माम



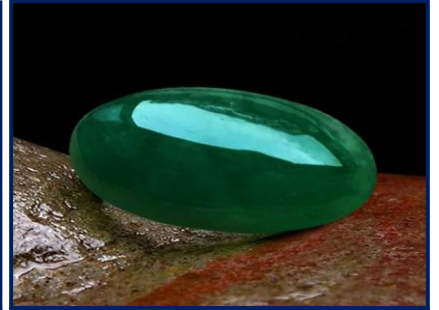
चरखो

चरखा



गचकी

क्लॅप



पाच

पन्ना

च

च

च

छ

छन्नी

छेनी

घे छिन्नी, तास लाकडाचो तुकडो
एक एक जोड तुकडो आनी घडय
बरो बाकडो



छकडो

बैलगाडी



छत्र

छत्र



छडी

छडी

छ

छ

छ

ज

जनेल

खिड़की

उगड जनेल, येवं दी उजवाड
येवं दी वारो
सैमाचो घेवया आमी आनंद खरो



जल्लो

तिलचट्टा



अजगर

अजगर



वजन

तराजू

ज

ज

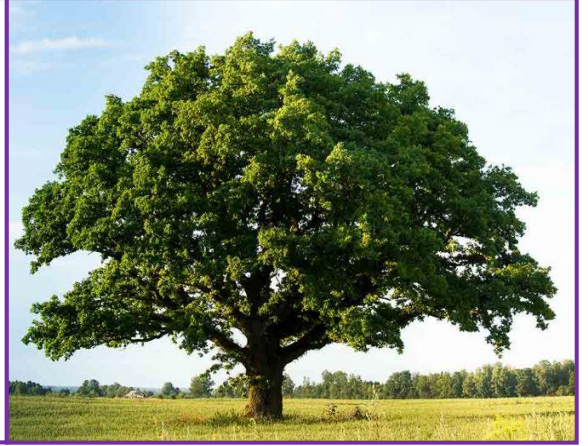
ज

झ

झाड

पेड़

आंब्याचें झाड
आंबो लिपला पानां आड
झरझर झाडार चडून
बेगीबेगीन आंबो काड



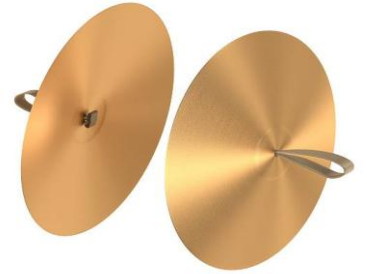
झबलें

झबला



झाडू

झाडू



झांज

झाँझ

झ

झ

झ

अ

मञ्च/मंच

मंच

सभेची तयारी
मञ्च/मंच सजयला
मुखेल सोयऱ्याक
हार तुरो दवरला



अञ्चल/अंचल

अंचल



क्रौञ्च/क्रौंच

सारस



चोञ्च/चोंच

चोंच

अ

अ

अ

ट

टमाट

टमाटर

टमाट आसता पुश्टीक,
सालाद करता रुचीक



टपाल

पत्र पेटिका



मटर

मटर



कपाट

अलमारी

ट

ट

ट

ठ

माठ

मटका

उदक भरलां
माठांत सान
दर एकल्याची
भागयता तान



गाठ

गाँठ



गठली

थैली



साठ

आम पापड़

ठ

ठ

ठ

ड

डमरू

डमरू

डमरू वाजता डम, डम, डम
बाबू नाचता झम, झम, झम



डबो

डिब्बा



खडप

पत्थर



चिबूड

खरबूजा

ड

ड

ड

ढ

ढग

बादल

येतलो आतां पावस
ढग जमल्यात आकाशांत
चिप्प भिजया पावसांत



ढबू

शिमला मिर्च



गाढव

गधा



भेढ

भेड़

ढ

ढ

ढ

ण

ओणव

झुकना

घे ओणव, कर नमस्कार
आळय जिणेंत सदांच बरे संस्कार



मेणवात

मोमबत्ती



पांयजण

पायल



हिचण

ईल

ण

ण

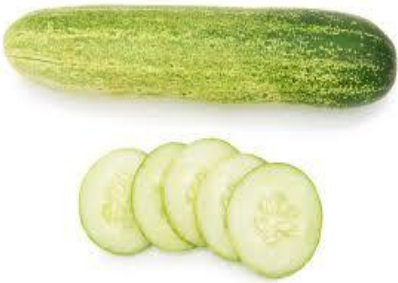
ण

त

तबलें

तबला

वाजय तबलें धा धीन धा
आंकडे म्हण आठ, णव, धा



तवशें

खीरा



सतरंज

शतरंज



जोत

हल

त

त

त

थ

थाळी

थाली

सान सान थाळी
तांतूंत गोड गोड पोळी



थवो

झुंड



कथक

कथक



मेथी

मेथी

थ

थ

थ

द

दर्या

समुद्र

निळो निळो दर्या
माथ्यार रखरखतो सुर्या



दसण

गुड़हल



मोदक

मोदक



कागद

कागज

द

द

द

ध

धरवत

लकड़ी का सामान

काप लाकूड घेवन खरवत
तासून पुसून घडय धरवत



धरण

बाँध



इंधन

ईंधन



मध

शहद

ध

ध

ध

न

नर्तिका

नर्तकी

छूम छनन छूम
नर्तिका नाचता
ताल, लय सांबाळटा
पळयतल्याक भुलयता



नळे

खपरैल



कानतोपी

कनटोप



नयन

आँख

न

न

न

प

पणटी

दिया

पणटी पेटय,
उजवाड फाकय



पणस

कटहल



पोपट

तोता



काप

कतली

प

प

प

फ

फळ

फल

फळांत आसता
जिवनसत्व
तातूंत आसता
भलायकेचें तत्व



फणी

कंघा



सफरचंद

सेब



वाफ

भाप

फ

फ

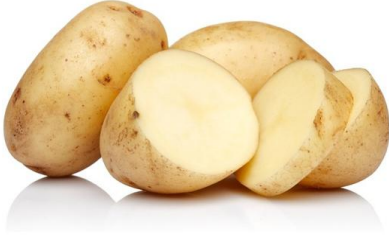
फ

ब

बकें

बत्तख

धवेंच एक बकें,
शेता मेरेर बसलां
केन्ना काय येतलें सावज,
चोंचींत धरुंक रावलां



बटाट

आलू



साबण

साबुन



गुलाब

गुलाब

ब

ब

ब

भ

भजन

भजन

देवळांनी भजन गायतात
भक्त देवाक आळयतात



भरो

लकड़ी का गड्ढर



भटजी

पुजारी



भट्टी

भट्टी

भ

भ

भ

म

मगर

मगरमच्छ

काळें खरखरीत आंग घेवन
उदकांतय रावता,
जमनीरय रावता
मगर आपलें जिवीत सारता



मको

भुट्टा



करमल

कमरख



बदाम

बादाम

म

म

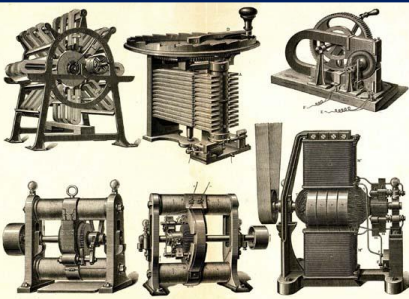
म

य

गाय

गाय

एक आसली गाय
तिका मेळ्ळें बाय
गाय म्हणटा,
“बाय, म्हाका
घरा व्हरून पाय”



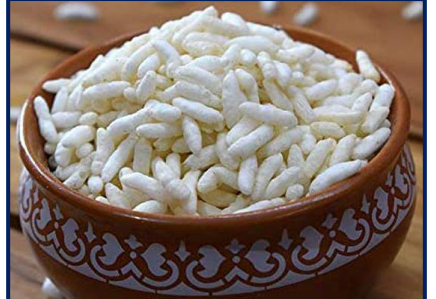
यंत्र

उपकरण



आयदन

बर्तन



ल्हाय

लाई

य

य

य

र

रथ

रथ

भावार्थान रथ ओड
देवाची भक्ती जोड



रगडो

ओखली



पारवो

कबूतर



केशर

केसर

र

र

र

ल

लस्कर

सैनिक

लस्कर शिमेर रक्षण करता
म्हूण आमी सुगूर न्हिदता



लवंग

लौंग



पालक

पालक



डूल

झुमका

ल

ल

ल

व

वळें

आधा नारियल

नाल्लाचें वळें, ताची सोबीत बरी
कातली
भाजयेंत घातल्यार भाजी रुचीक
जातली



वड

बरगद



कावळो

कौआ



शींव

शेर

व

व

व

श

शंख

शंख

वाजय शंख कर निनाद
इश्टांक तुज्या घाल साद



शतावरी

शतावरी



बडीशेप

सौंफ



कलश

कलश

श

श

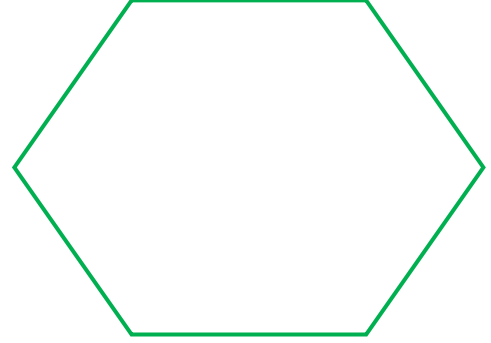
श

ष

षट्कोण

षट्कोण

षट्कोनाचे स कोन
चार कोनांचो चवकोन



वर्षा

वर्षा



हर्ष

हर्ष



पुष्पगुच्छ

गुलदस्ता

ष

ष

ष

स

सत्री

छाता

पावस आयल्यार सत्री फुलय
पावस गेल्यार सत्री पालय



सवणें

गौरैया



मासळी

मछली



मुंगूस

नेवला

स

स

स

ह

हरण

हिरण

सोबीत बरें हरण
टिपक्या टिपक्यांची फाट
वनांत धांवता वेगान
रानावनांतली अटंगी वाट



हळद

हल्दी



वाहन

वाहन



ग्रह

ग्रह

ह

ह

ह

ळ

सूर्यकमळ

सूर्यकमल

सुर्याक सदांच तोंड करून
आसपी कमळ सूर्यकमळ



अळमें

कुकुरमुत्ता



हळी

गजरा



हिळो

हँसिया

ळ

ळ

ळ

क्ष

द्राक्ष

अंगूर

रसाळ हांव द्राक्ष
रुचीक हांव द्राक्ष
घोसांनीच रावतात
वालीचेर हुमकळटात



क्षत्रीय

क्षत्रिय



नक्षत्र

तारा



अक्ष

लट्टू

क्ष

क्ष

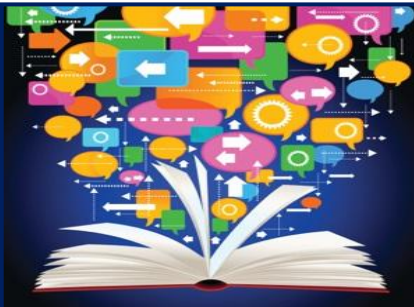
क्ष

ज्ञ

यज्ञ

यज्ञ

यज्ञ करून माग रे दान
सान हांव, जावचों म्हान



ज्ञान

ज्ञान



विज्ञान

विज्ञान



ज्ञानेश्वर

ज्ञानेश्वर

ज्ञ

ज्ञ

ज्ञ

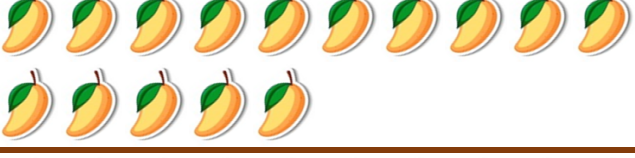
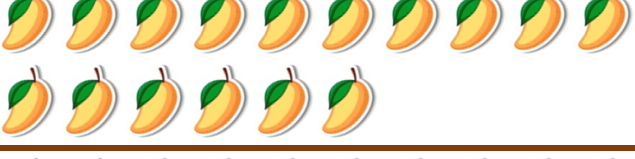
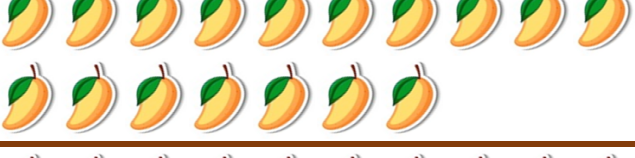
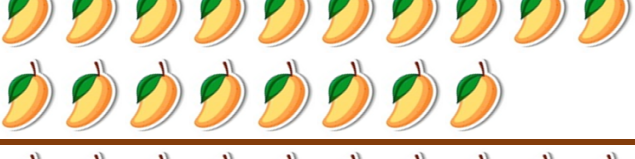
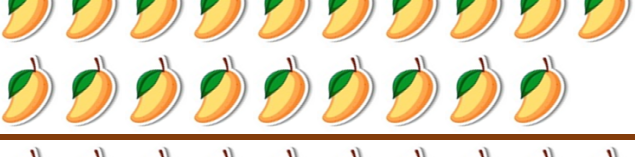
स्वर	मात्रा	उदाहरण	चित्र
अ	ॆ	बस	
आ	ा	माळ	
इ	ि	गितार	
ई	ी	मणी	
उ	ु	मुकूट	

स्वर	मात्रा	उदाहरण	चित्र
ऊ	ू	लाडू	
ऋ	ृ	मृदंग	
ए	े	पदेर	
ऐ	ै	बैल	
ओ	ो	मोर	

स्वर	मात्रा	उदाहरण	चित्र
औ	ौ	सौरशक्ती	
अं	ं	पतंग	
अः	ः	नमः	

आंकडे

१	एक		1
२	दोन		2
३	तीन		3
४	चार		4
५	पांच		5
६	स		6
७	सात		7
८	आठ		8
९	णव		9
१०	धा		10

११	इकरा		11
१२	बारा		12
१३	तेरा		13
१४	चवदा		14
१५	पंदरा		15
१६	सोळा		16
१७	सतरा		17
१८	अठरा		18
१९	एकुणीस		19
२०	वीस		20

सकयल दिल्ली संख्या बरोवया!

१	१	१	१	
२	२	२	२	
३	३	३	३	
४	४	४	४	
५	५	५	५	
६	६	६	६	
७	७	७	७	
८	८	८	८	
९	९	९	९	
१०	१०	१०	१०	

୧୧	୧୧	୧୧	୧୧	
୧୨	୧୨	୧୨	୧୨	
୧୩	୧୩	୧୩	୧୩	
୧୪	୧୪	୧୪	୧୪	
୧୫	୧୫	୧୫	୧୫	
୧୬	୧୬	୧୬	୧୬	
୧୭	୧୭	୧୭	୧୭	
୧୮	୧୮	୧୮	୧୮	
୧୯	୧୯	୧୯	୧୯	
୨୦	୨୦	୨୦	୨୦	

हिंदी वर्ण

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह		
क्ष	त्र	ज्ञ		
श्र	ड़	ढ़		

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala .



For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:
Go to <https://epathshala.nic.in/topics.php> and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA .



For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:
Go to <https://diksha.gov.in/resources> and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAO	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHLE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PÜ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANOWRY (MÖÜT)	104	TELUGU

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		



भारतीय भाषा संस्थान

Central Institute of Indian Languages

(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)

Manasagangotri, Mysuru - 570 006

☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi - 110016

☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in